RESEARCHERID
THOMSON REUTERS

[तिवारी, 5(9): September 2018] *ISSN 2348 – 8034*
DOI- 10.5281/zenodo.1434191 **Impact Factor- 5.070**

GLOBAL JOURNAL OF ENGINEERING SCIENCE AND RESEARCHES

व्यावसायिक आकांक्षा का तुलनात्मक अध्ययनय :उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के कक्षा ग्यारहवी केविद्यार्थी

ऋत्विज तिवारी
विभागाध्यक्ष शिक्षा संकायए चैतन्य कालेज पामगढ़,जांजगीर–चाम्पा

ण भूमिका

वर्तमान समय में शिक्षा एवं शिक्षण के दृष्टिकोण में आमूलचूल परिवर्तन होते जा रहे है। अब शिक्षा का केन्द्र बिन्दु अध्यापक नहीं बल्कि विद्यार्थी है। आज के विद्वान शिक्षाशास्त्री बालक के स्वतंत्र व्यक्तितव विकास के सिद्धांत को सर्वोपरि मानता है। परिस्थितियॉ, महंगाई और सामाजिक अर्थव्यवस्था देखकर हमें स्वीकार करना पड़ता है। कि आज प्रत्येक छात्र को सामाजिक जरूरत एवं स्वयं की आर्थिक स्थिति को ध्यान में रखकर विकासोन्मुखी व्यवसायिक शिक्षा का चयन एवं अध्ययन करना चाहिये। किन्तु इस लक्ष्य तक पहुॅचने के लिए आवश्यक है कि हम बालक को विषय के चुनाव के समय उसकी बौद्धिक शक्ति अभिरूचि और पारिवारिक तथा स्वयं बालक के सामर्थ्य को पूरा ध्यान में रखें। को व को की दार्शनिक धारा का इससे घनिष्ठ संबंध है। उनका सिद्धांत है कि बच्चों के मनोभाव को अच्छी तरह समझने का सफल प्रयास ही उन्हें सही दिशा दे सकता है। बच्चों को सच्चाई के मार्ग पर ले जाकर उनके व्यक्तितव एवं सामाजिक विकास का कार्य किया जा सकता है अतः विद्यालयीन स्तर में प्रत्येक छात्र के हर एक पक्ष में रूचि लेकर उसकी व्यवसायिक आकांक्षा जानना आवश्यक है।

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारत के छोटे बड़े तमाम व्यवसाय उद्योगों की स्थापना हुई। परमाणु शक्ति के विकास से औद्योगीकरण के क्षेत्र में अकस्मात काफी परिवर्तन हुआ। परमाणु शक्ति के लिये प्रयोग के लक्ष्य की ओर बढ़ने से अनेक नवीन व्यवसायों का अस्तित्व कायम हुआ। यातायात के दूरगामी विकास साधनों के कारण आज भारतीय नागरिक यह सोचने लगे है कि अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर आज की व्यवसायिक प्रतिस्पर्धा चल रही है। उसमें ये भी अपना स्थान बना चुके है। विदेशों में समुन्नत व्यवसाय से अर्थोपार्जन की प्रवृति बढ़ती जा रही है। व्यवसाय में विविधता को दृष्टिगत रखते हुए माध्यमिक शिक्षा आयोग ने बहुउद्देशीय शिक्षा संस्थानों की सिफारिश की थी । जिसके अन्तर्गत कक्षा 9वीं के प्रवेश के समय विषयों के चुनाव में अनेक विकल्प रखें तथा पाठ्यक्रम में उचित परिवर्तन किया गया। किन्तु यह सब उतना सार्थक सिद्ध नहीं हुआ जितनी अपेक्षा थी। नयी शिक्षा नीति के तहत 10+2+3 की पद्धति लागू की गई, इसमें विद्यार्थी को कक्षा 10वीं के बारे में पूर्व सामर्थ्य तथा सभी विषयों के संबंध में पूर्ण जानकारी तथा उनमें संबंधित व्यवसायों की जानकारी के बाद ही ग्यारहवीं कक्षा से अपनी आकांक्षा तथा रूचि अनुसार विषयों का चुनाव करने की व्यवस्था की गई । इस संबंध में निर्देशन तथा परामर्श देने का दायित्व भी शिक्षक और विद्यालयीन प्रशासकों को सौंपा गया। उत्तम और अनुकूल शिक्षा बच्चों को इस योगय बनाती है कि शिक्षक समझा सकते है कि छात्र–छात्राओं की रूचि किस दिशा में आगे बढ़ने की है। उनका समायोजन किस तरीके से किया जाये ताकि वे सर्वोत्तम विकास कर उत्तम रोजगार प्राप्त कर सकें।

णण अध्ययन का आवश्यकता

वर्तमान समय में मानव दिनों दिन प्रगति करता जा रहा है। यह प्रगति केवल आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक, व्यवसायिक, धार्मिक दृष्टि से ही नहीं बल्कि शैक्षिक दृष्टि से भी प्रगति हो रही है। प्रत्येक मानव अपनी इच्छाओं को संतुष्ट करना चाहता है, जिसे पूर्ण करने के लिए अनेक प्रयास करता है। इसी प्रकार शोधकर्ता का जागरूक होना अनिवार्य है, तभी वह समस्या के प्रति सजग रहेगा।

किशोरों की वर्तमान स्थिति को ध्यान में रखते हुए यह आवश्यक है कि किशोरों की व्यवसायिक आकांक्षा के विकास की ओर समुचित ध्यान दिया जायें। कि उसकी व्यवसायिक आकांक्षा में वृद्धि हो सकें।

इस समस्या से संबंधित अनेक शोधकार्य किये गये लेकिन किसी ने पूर्ण रूप से इस समस्या पर कार्य नहीं किया। इन सब स्थितियों को ध्यान में रखकर शोधकर्ता ने उक्त समस्या का आवश्यकता महसूस की हैः– हायर सेकेण्ड्री विद्यालय के कक्षा ग्यारहवीं के छात्रों की व्यवसायिक आकांक्षा का तुलनात्मक अध्ययन।

अध्ययन का क्षेत्र
अध्ययन की आवश्यकता यह बात स्पष्ट करती है कि अनुसंधान, शैक्षणिक समस्या एवं कठिनाईयों को सुलझाने के निमित्त किया गया है ताकि बालकों की अन्तर्निहित योग्यता के अनुरूप उन्हें शिक्षित किया जा सकें। ताकि उन्हें व्यवसाय पाने में कठिनाई न हो और उनकी शिक्षा व्यर्थकर न हो जाए । प्रत्येक छात्र की शिक्षा का सही उपयोग हो और वह उससे अपने व्यवसाय चयन में सरलता अनुभव कर सकें इसी बात को लक्ष्य मानकर इस लघु शोध प्रबंध हेतु भिलाई क्षेत्र के निजी एवं शासकीय शालाओं के छात्रों का चयन किया गया है। इसमें यह पता लगाने का प्रयत्न किया गया है कि शालाओं भिन्नता से आकांक्षा भिन्नता में कितना और क्यों अंतर आता है।

अध्ययन का उद्देश्य

शोध एक उद्देश्य पूर्ण प्रकिया है प्रत्येक क्षेत्र में शोध कार्यो का नियोजन किया जाता है जिनका अपना एक विशिष्ट उद्देश्य होता हैं। साधारणतः शोध के तीन उद्देश्य माने जाते है।सैद्धांतिक, तथ्यात्मक तथा व्यावहारिक, शोध कार्य के द्वारा किसी नवीन सिद्धांत का प्रतिपादन होता है। या किसी नवीन व्यवहारिकता को प्रस्तुत किया जाता है। अतः शोधकर्ता को अपने कार्य के उद्देश्य को स्पष्ट रूप से अंकित करना चाहिए । प्रत्येक शोध कार्य में उद्देश्यों को निश्चित कर अवश्य लिखना चाहिए ।

1. उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के कक्षा ग्यारहवी के विद्यार्थियों की व्यावसायिक आकांक्षा का तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के कक्षा ग्यारहवीं के छात्रों की व्यावसायिक आकांक्षा पर लिंग के प्रभाव का अध्ययन करना ।
3. उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के कक्षा ग्यारहवीं के छात्रों की व्यावसायिक आकांक्षा पर शालाओं के प्रकार के प्रभाव का अध्ययन करना।
4. उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के कक्षा ग्यारहवी के छात्रों की व्यावसायिक आकांक्षा पर लिंग व शालाओं के प्रकार की अन्तःक्रिया के प्रभाव का अध्ययन करना।

अध्ययन की परिकल्पना

शोध प्रकिया की महत्वपूर्ण प्रकिया में परिकल्पनाओं का प्रतिपादन सम्मिलित हैं । परिकल्पना शोध समस्या का प्रस्तावित समाधान होता है।

परिकल्पना का अर्थ है एक उपकथन से है, जो समस्या समाधान की अवधारणा होती है। और शोधकर्ता उसकी पुष्टि करने का प्रयासकर्ता है। परिकल्पना का स्परूप एक व्याख्या के रूप में होता है। जो अवलोकन या सिद्धांतों पर आधारित होता है। जब किसी संभावित सिद्धांतों को प्रदत्तों तथा प्रमाणों के आधारों पर पुष्टि की जाती हैं तब उसे परिकल्पना की संज्ञा दी जाती है।

परिकल्पना अंग्रेजी में हाइपोथीसिस शब्द से बना है –

Hypo (हाइपो) + Thesis (थीसिस) = Hypothesis हाईपोथीसिस
Hypo (हाइपो) का अर्थ = सम्भावित
Thesis (थीसिस) का अर्थ = समस्या के समाधान
इस कथन अर्थात Hypothesis हाइपोथीसिस का अर्थ – 'सम्भावित समस्या के समाधान का कथन है।'

परिकल्पना की परिभाषा

जॉन.डब्ल्यू. बेस्ट के अनुसार

''परिकल्पना एक विचार युक्त कथन है, जिसका प्रतिपादन किया जाता है और अस्थाई रूप से सही मान लिया जाता है, और निरीक्षण व प्रदत्तों के आधार पर तथ्यों पर तथा परिस्थितियों के आधार पर व्याख्या की जाती है, जो आगे शोध कार्यो को निर्देशन देता है ।''

गुड तथा हैट के अनुसार

''परिकल्पना वह बात कहती है जिसे हम आगे सोचते है परिकल्पना सदैव आगे को देखती है। यह साध्य होती है, जिसकी वैधता हेतु परिक्षण किया जाता है। यह सत्य सिद्ध हो सकती है और नहीं भी हो सकती है।''

परिकल्पना के प्रकार :–

साधारणतः परिकल्पना चार प्रकार की होती है –

1. प्रश्न के रूप में
2. घोषित कथन
3. दिशा युक्त कथन
4. दिशा विहिन कथन

H_1 उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के कक्षा ग्यारहवीं की छात्रों की ''व्यावसायिक आकांक्षा'' पर लिंग का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पाया जायेगा।

H_2 उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के कक्षा ग्यारहवीं की छात्रों की ''व्यावसायिक आकांक्षा'' पर शालाओं के प्रकार का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पाया जायेगा।

H_3 उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के कक्षा ग्यारहवीं की छात्रों की ''व्यावसायिक आकांक्षा'' पर लिंग व शालाओं की प्रकार की अन्तःक्रिया का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पाया जायेगा।

अध्ययन की परिसीमा :–

प्रस्तुत शोध कार्य के लिए उच्चतर माध्यमिक शालाओं के ग्यारहवीं कक्षा की विद्यार्थियों की ही आकांक्षा व्यवसायिक स्तर जानने हेतु किया गया है उसे परिष्कृत, परिमार्जित करने की निश्चित सीमा है। इसी सीमांकन के अन्तर्गत सभी लघुशोध संचालित है। यह सीमाएं निम्नांकित है –

1. यह अध्ययन केवल भिलाई शहर तक ही समाहित है।
2. इसमें केवल भिलाई शहर के निजी एवं शासकीय शालाओं का चयन किया गया है।
3. सर्वेक्षण में केवल ग्यारहवीं कक्षा के छात्र–छात्राओं को ही चुना गया है।
4. यह अध्ययन केवल विद्यार्थियों की व्यवसायिक आकांक्षा तक ही सीमित है।
5. इस शोध के अन्तर्गत 240 विद्यार्थियों का परीक्षण किया गया है। इसमें 120 लड़के तथा 120 लड़कियॉ शामिल है।

ISSN 2348 – 8034
Impact Factor- 5.070

परिणाम और व्याख्या

सरविलक सांख्यिकीय इन तथ्यो के संकलन, वर्गीकरण प्रस्तुतीकरण तथा विश्लेषण से मिलकर बना है। जो विधिपूर्वक संकलित किया जाता है। ऐसे संकलन में किसी प्रकार का पक्षपात नहीं किया जाता। यह संकलन एक पूर्व निश्चित उद्देश्य के लिये किया जाता है। सांख्यिकीय अनुसंधान का एक प्रमुख आधार है। यह वैज्ञानिक अध्ययन की वह कला व विज्ञान है जिसके अन्तर्गत प्रायः पूर्व निश्चित लक्ष्य के आधार पर अमूर्त तथ्यों का मापन या आंकड़ों का संकलन, वर्गीकरण, विश्लेषण केवल इसी उद्देश्य से किया जाता है ताकि प्राकृतिक और सामाजिक घटनाओं के विषय में अनुभव तथा तुलनात्मक ज्ञान उपलब्ध हो सकें तथा पर्याप्त मात्रा में संबंधित घटनाओं के पारस्परिक संबंधों के विषय में वैज्ञानिक स्तर पर किसी ठोस भविष्यवाणी की जा सकें।

करलिंग के अनुसार विवेचना विश्लेषण के परिणाम को लिया जाता है। इसमें अनुसंधान के तहत प्राप्त संबंधों को तर्कसंगत आधार पर अनुमानित कर अध्ययन संबंधी का निष्कर्ष ज्ञात किया जाता है।

अनुसंधान कार्य में कई आंकड़ों को जोड़कर उन्हें यथावत् प्रस्तुत कर दिया जाये तो वह प्रयास व्यर्थ रहता है। अतः यह जरूरी है कि आंकड़ों को व्यवस्थित कर उन्हें ऐसा प्रस्तुत किया जाये ताकि अध्ययन की गई विशेषता का परिचय सुगमता से हो जाये। इस कार्य में साख्यिकीय के प्रयोग का विशेष स्थान है। वर्तमान में प्रत्येक क्षेत्र में किये जाने वाले अनुसंधान कार्य में इसे एक आवश्यक उपकरण के रूप में प्रयोग किया जाता है।

इस प्रकार हम देखते है कि समूह का निश्चित वैज्ञानिक वर्णन करने के लिये दो चरों में संबंध देखने के लिये किसी घटना को कम से कम किसी कारक के माध्यम से स्पष्ट करने हेतु समूह भिन्नता का प्रदर्शन, भिन्नता का मूल्यांकन तथा आंकड़ों की निश्चत सत्यता पर विश्वास किया जाता है। जार्ज एवं फरम्यूमन के अनुसार सांख्यिकीय वैज्ञानिक विधि की एक शाखा है। इसका संबंध आंकड़ों तथा प्रयोगों द्वारा प्राप्त आंकड़ों के संकलन, वर्गीकरण, विवरण तथा विवेचन से है। इसका वास्तविक उद्देश्य जनसंख्या संबंधी संख्यात्मक विशेषताओं का वर्णन करना तथा उनके विषय में अनुमान लगाना है।

विश्लेषण से प्राप्त परिणाम जी निष्कर्ष प्रस्तुत करते है। उसका यथार्थ के आधार पर निष्कर्षिकरण करना होता है। जिसके अंतर्गत परिणाम में सार्थकता स्तर की जॉच एवं मूल बातें निहित होती है, जो समस्या से सम्बंधित चर के संबंध में शोधकर्ता को एक नई दिशा प्रदान करती है।
सारणी एवं विश्लेषण :–

प्रस्तुत लघुशोध की समस्या उच्चतर माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों में व्यावसायिक आकांक्षा का अध्ययन करना है अतः इस अध्याय में शासकीय, अशासकीय शाला के छात्रों की व्यावसायिक आकांक्षा की योग्यता पर आंकड़ों व्याख्या, विश्लेषण एवं निष्कर्ष के लिए परिकल्पनाओं का निर्माण व उसकी सार्थकता हेतु 2way Anova द्वारा गणना की गई है। अतः प्रथम तालिका 4.1 में कक्षा ग्यारहवीं की विद्यार्थियों की व्यावसायिक आकांक्षा पर शाला के प्रकार एवं लिंग के प्रभाव को देखने के लिए प्राप्त परिणामों को प्रदर्शित किया गया है।

तालिका क्रमांक–1

शाला के प्रकार	छात्र	छात्रा	योग
शासकीय विद्यालय	$\sum x = 2836$ $\sum x^2 = 137358$ $n = 60$	$\sum x = 2892$ $\sum x^2 = 141250$ $n = 60$	$\sum x = 5728$ $\sum x^2 = 278608$ $n = 120$
अशासकीय विद्यालय	$\sum x = 2899$ $\sum x^2 = 143217$ $n = 60$	$\sum x = 2767$ $\sum x^2 = 132835$ $n = 60$	$\sum x = 5666$ $\sum x^2 = 276052$ $n = 120$
योग	$\sum x = 5735$ $\sum x^2 = 280575$ $n = 120$	$\sum x = 5659$ $\sum x^2 = 274085$ $n = 120$	$\sum x = 11394$ $\sum x^2 = 554660$ $n = 240$

उपर्युक्त तालिका की गणना हेतु 2way Anova प्रयुक्त किया गया है। जिसका विवरण तालिका क्रमांक 2 में प्रदर्शित किया गया है।

तालिका क्रमांक – 2

Source	Sex/df	SS	Ms	F	Sig.
Sex	1	24.05	24.05	.41	NS
Type of School	1	16.01	16.01	.27	NS

ISSN 2348 – 8034
Impact Factor- 5.070

Intreraction Sex, Types of School	1	147.27	147.25	2.5	NS
SSw	N – ab =240-4 =236	13542.52	57.38	-	-

परिकल्पना

H_1 - उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के कक्षा 11वीं के छात्रों के व्यावसायिक आकांक्षा पर लिंग का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पाया जायेगा।

सारणी क्रमांक 4.2 अवलोकन करने से ज्ञात होता है कि लिंग के आधार पर प्राप्त F का मान .41 प्राप्त हुआ है। जिसके लिए df (1,236) विश्वसनीय स्तर .05 पर सारणी मान..... है। चूँकि प्राप्त मान सारणी मान से कम है। अतः प्राप्त मान सार्थक नहीं है।

अतः यह निष्कर्ष निकलता है कि 0.05 के विश्वसनीय स्तर पर कक्षा 11वीं के छात्रों की व्यावसायिक आकांक्षा अध्ययन पर उनके लिंग को कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ेगा।

अतः परिकल्पना H_1 स्वीकृत की गयी।

H_2 - उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के कक्षा 11वीं के छात्रों के व्यावसायिक आकांक्षा पर शाला के प्रकार का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पाया जायेगा।

सारणी क्रमांक 4.2 अवलोकन करने से ज्ञात होता है कि शालाओं के प्रकार के आधार पर प्राप्त F का मान .27 प्राप्त हुआ है। जिसके लिए df (1,236) विश्वसनीय स्तर .05 पर सारणी मान..... है। चूँकि प्राप्त मान सारणी मान से कम है। अतः प्राप्त मान सार्थक नहीं है।

अतः यह निष्कर्ष निकलता है कि 0.05 के विश्वसनीय स्तर पर कक्षा 11वीं के छात्रों की व्यावसायिक आकांक्षा अध्ययन पर उनके शालाओं के प्रकार का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ेगा।

अतः परिकल्पना H_2 स्वीकृत की गयी।

H_3 - उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के कक्षा 11वीं के छात्रों के व्यावसायिक आकांक्षा पर लिंग व शालाओं के प्रकार की अन्तःक्रिया का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पाया जायेगा।

सारणी क्रमांक 4.2 अवलोकन करने से ज्ञात होता है कि लिंग व शालाओं के प्रकार की मध्य अन्तःक्रिया के आधार पर प्राप्त F का मान 2.5 प्राप्त हुआ है। जिसके लिए df (1,236) विश्वसनीय स्तर .05 पर सारणी मान..... है। चूँकि प्राप्त मान सारणी मान से कम है। अतः प्राप्त मान सार्थक नहीं है।

अतः यह निष्कर्ष निकलता है कि 0.05 के विश्वसनीय स्तर पर कक्षा 11वीं के छात्रों की व्यावसायिक आकांक्षा अध्ययन पर उनके लिंग व शालाओं के प्रकार की अन्तःक्रिया का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ेगा।

अतः परिकल्पना H_3 स्वीकृत की गयी।

अध्याय 4 में सांख्यिकीय विश्लेषण करने के उपरांत निम्न परिणाम प्राप्त हुये है।

H_1 - उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के कक्षा 11वी के छात्रों की व्यावसायिक आकांक्षा पर लिंग का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पाया जायेगा ।

परिणाम – सारणी द्वारा यह स्पष्ट है कि $F=.41$, $P < 0.05$ पर सार्थक अंतर नहीं है। अर्थात हमारी परिकल्पना सत्य साबित होती है अतः कक्षा 11वीं के छात्रों का व्यावसायिक आकांक्षा अध्ययन पर उनके लिंग का सार्थक प्रभाव नहीं पड़ेगा।
निष्कर्ष – इसका कारण यह है कि छात्र–छात्राओं को आज विद्यालयों में समान स्तर पर समान ज्ञान और शिक्षा प्रदान की जा रही है।

H_2 - उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के कक्षा 11वी के छात्रों की व्यावसायिक आकांक्षा पर शालाओं के प्रकार का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पाया जायेगा ।

[तिवारी, 5(9): September 2018] *ISSN 2348 – 8034*
DOI- 10.5281/zenodo.1434191 **Impact Factor- 5.070**

परिणाम – सारणी द्वारा यह स्पष्ट है कि F=.41, $P < 0.05$ पर सार्थक अंतर नहीं है। अर्थात हमारी परिकल्पना सत्य साबित होती है अतः कक्षा 11वीं के छात्रों का व्यावसायिक आकांक्षा अध्ययन पर उनके शालाओं के प्रकार का सार्थक प्रभाव नहीं पड़ेगा।
निष्कर्ष – निष्कर्ष यह निकलता है कि सभी शालाओं के प्रकार का छात्रों पर प्रभाव नहीं पड़ेगा क्योंकि सर्वशिक्षा अभियान के तहत शासकीय शालाओं को शासन द्वारा निजी शालाओं की तहत ही सुविधा प्रदान की जा रही है, व लगभग सभी छात्र अपनी योग्यता के अनुसार हर समस्या के समाधान का प्रयत्न करते है।

H_3 - उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के कक्षा 11वी के छात्रों की व्यावसायिक आकांक्षा पर लिंग व शालाओं के प्रकार की अन्तःक्रिया का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पाया जायेगा ।

परिणाम – सारणी द्वारा यह स्पष्ट है कि F=.41, $P < 0.05$ पर सार्थक अंतर नहीं है। अर्थात हमारी परिकल्पना सत्य साबित होती है अतः कक्षा 11वीं के छात्रों का व्यावसायिक आकांक्षा अध्ययन पर उनके लिंग व शालाओं के प्रकार की अन्तःक्रिया पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ेगा।
निष्कर्ष – बालक व बालिकाओं का समान मानकर समान शिक्षा प्रदान की जा रही है, व सभी 14वर्ष के बालकों व बालिकाओं को निःशुल्क शिक्षा व अनिवार्य शिक्षा दी जा रही है व हर शालाओं में सभी छात्रों पर समान ध्यान दिया जाता है।

तथ्त्म्छबै

1ण *जायसवाल सीताराम –शिक्षार्थ निर्देशन और परामर्श विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा 1971*
2ण *राय पारसनाथ –अनुसंधान परिचय, प्रकाशक, लक्ष्मीनारायण अग्रवाल, आगरा 1973*
3ण *ए.बी.बी.जी.ओ –''नाईजीनियन छात्रों की शैक्षणिक एवं व्यवसायिक आकांक्षा का अध्ययन'' जनरल ऑफ एजुकेशनल एण्ड वोकेशनल मैनेजमेंट 1970, पेज 55–67*
4ण *अग्रवाल एस सी –व्यवसायिक संस्थानों के शिक्षक एवं शैक्षणिक संस्थानों में शिक्षकों की व्यवसायिक आकांक्षा की संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन 1972*
5ण *बवा एस.एस. –उच्चतर माध्यमिक शिक्ष के व्यवसायीकरण की समस्या । जनरल ऑफ दि इंस्टीट्यूशनल एजुकेशन ऑफ रिसर्च वाल्यूम क 1961*
6ण *पाठक एवं त्यागी –शिक्षा के सिद्धांत 1977*
7ण *ग्रेवाल एस.सी –''मैनुवल फॉर आक्युपेशनल एक्सपेटेशन स्केल । नेशनल साइक्रो. कार्या.4/230, कचहरी घाट, आगरा 1984''*
8ण *कृष्णन बी. एवं कुपूस्वामी बी. – ''उच्चतर माध्यमिक शाला के विद्यार्थियों की व्यवसायिक आकांक्षा का अध्ययन'' जनरल साइकोलॉजिकल रिसर्च, मैसूर विश्वविद्यालय 1976*
9ण *गुड, नारमेन, कालेन एवं केथन ए.–आकांक्षा स्तर का लंबवत् अध्ययन. स्टेट युनि. स्टोनी, न्यूयार्क*
10ण *माथुर एस.एस. –शिक्षा मनोविज्ञान, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा पेज नं. 18–22, 1961*
11ण *पाण्डे अनिरूद्ध –प्रोग्रेस ऑफ एजुकेशन, पृष्ठ 105–156, 1983*
12ण *तुलसी पी.के. एवं कोटले आर.बी. –आकांक्षा स्तर पर अहम् ग्रस्त से संबंधित अध्ययन 1962*
13ण *पेण्डारकर–एजुकेशनल रिसर्च वोल्यूम 2, पृष्ठ 1291, 1977*
14ण *सिंह आर.पी. –आकांक्षा एवं रचनात्मक कार्य में संबंध – ''19बी''*
15ण *थानरल एस.एम.ए.एस. –उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के अनु. जाति तथा सामान्य जाति के विद्यार्थियों की नियंत्रित स्थिति, बुद्धि तथा व्यवसायिक आकांक्षा का तुलनात्मक अध्ययन 1973*
16ण *दुग्गल सत्यपाल– निर्देश एवं परामर्श 1970 विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा*
17ण *वर्मा बी.आर. –विद्यार्थियों का अभिवृत्त मूल्य एवं आकांक्षा स्तर पर अध्ययन 1981.*